



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 93)

- नई दिल्ली, सोमवार, अप्रैल 28, 1986/वैशाख 8, 1908

No. 93]

NEW DELHI, MONDAY, APRIL 28, 1986/VAISAKHA 8, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as  
a separate compilation

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, 28 अप्रैल, 1986

निर्यात व्यापार नियंत्रण

सार्वजनिक सूचना सं. 7-ई टी सी (पी एन)/86

विषय: चन्दन की लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प का निर्यात

फा.सं. 6/9/68 ई-I.— आयात एवं निर्यात नीति, 1985-88 (खंड 2) के अनुबंध-2 के पैरा 2क की ओर ध्यान दिलाया जाता है जिसमें लकड़ी और इमारती लकड़ी की निर्यात नीति दी गई है।

2. यह निश्चय किया गया है कि चन्दन की लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प के निर्यात के मामले में, निर्यातकों को अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी से इस बारे में एक यह प्रमाण पत्र प्राप्त करना पड़ेगा कि चन्दन की लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प का मूल्य संयोजन समय-समय पर विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) द्वारा घोषित प्रति मीट्रिक टन चन्दन की लकड़ी के औसत आधार मूल्य से 300 प्रतिशत से कम नहीं है। ऐसे चन्दन की

लकड़ी के हस्तशिल्पों का निर्यात अनुमित किया जाएगा जो सम्पूर्ण हों और जिनमें उसे आगे कच्चा माल विकृत करने के लिए कोई गुनाइन नहीं हो। ये वस्तुएं "प्रद्वे परिष्कृत/अवस्था उत्कर्ष का हुई या सामग्री तौर पर बाह्य रूप दी गई/निष्कारण की हुई नहीं होंगी।" तदनुसार, आयात एवं निर्यात नीति, 1985-88 (खंड 2) के अनुबंध-2 के वर्तमान पैरा 3क को निम्नलिखित द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा:—

3क चन्दन की लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प : निर्यात के मामले में, निर्यातकों को अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी से इस बारे में एक यह प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना पड़ेगा कि चन्दन की लकड़ी से निर्मित हस्तशिल्प का मूल्य संयोजन समय-समय पर विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) द्वारा घोषित प्रति मी. टन चन्दन की लकड़ी के औसत आधार मूल्य से 300 प्रतिशत से कम नहीं है। ऐसे चन्दन की लकड़ी के हस्तशिल्पों का निर्यात अनुमित किया जाएगा जो सम्पूर्ण हों और जिनमें उसे आगे

वृद्धि प्राप्त दिखान करने की गुंजाइश नहीं है।  
ये वस्तुएँ अर्ध-निष्कृत/अनन्य उत्कीर्ण की हुई  
या सस्वरी तार पर बाह्य रूप दी हुई/निष्कारण  
की हुई नहीं होंगी।”

राजीव लोचन मिश्र, मुख्य नियंत्रक,  
आयात एवं निर्यात

# MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 28th April, 1986

## EXPORT TRADE CONTROL

PUBLIC NOTICE NO. 7-ETC(PN)/86

Subject : Export of Handicrafts made of Sandal Wood

File No. 6/9/86-E-I.—Attention is invited to para 3A of Annexure-II of Import & Export Policy, 1985-88 (Volume II) laying down export policy of wood and timber.

2. It has been decided that in the case of export of Handicrafts made of sandal wood, the exporters shall be required to obtain a certificate from the Regional Officer of the All

India Handicrafts Board to the effect that the value addition of handicrafts made of sandal wood is a minimum of 300 per cent of the average base price of sandal wood per M.T. announced by the Development Commissioner (Handicrafts) from time to time. Export of such sandal wood handicrafts shall be allowed, which are complete and have no scope for further mutilation of raw material. These shall not be “semi-finished/rough carved or with superficial surface/etching”. Accordingly, existing para 3A of Annexure-II of Import & Export Policy, 1985-88 (Volume-II) shall be substituted by the following :—

3A. “In the case of export of Handicrafts made of sandal wood the exporters shall be required to obtain a certificate from the Regional Officer of the All India Handicrafts Board to the effect that the value addition of Handicrafts made of sandal wood is a minimum of 300 per cent of the average base price of sandal wood per M.T. announced by the Development Commissioner (Handicrafts) from time to time. Export of such sandal wood handicrafts shall be allowed, which are complete and have no scope for further mutilation of raw material. These shall not be semi-finished/rough carved or with superficial surface/etching.”

R. L. MISHRA, Chief Controller  
of Imports and Exports